'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ७५ | वाराणसी, गुरुवार, २५ जून, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

स्वागत-भाषण

जम्मू (कश्मीर) ९-६-'५९

जम्मू सर्वोदय का उत्तम केन्द्र बने

प्रातःकाल की मंगल वेला में आप लोगों के दर्शन हो रहे हैं, इससे हमें बड़ी खुशी हो रही है। आठ साल से हमारी पैदल यात्रा भारत में चल रही है। अब हम जम्मू और कश्मीर में दाखिल हुए हैं। इसे आज लगभग २० दिन हो रहे हैं। इतने समय में हमने काफी देखा और सुना और अब भी हमारा यही मुख्य कार्यक्रम रहेगा। हम यहाँ देखेंगे और सुनेंगे—यही हमने जाहिर भी किया था। जम्मू और कश्मीर का मिशन देखने का और सुनने का ही है।

दिमाग के साथ-साथ दिल भी बड़ा बने

आज दुनिया की हालत जितनी डाँवाडोल है, उतनी पहले कभी नहीं थी। इसमें घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं है। विज्ञान बहुत बढ़ रहा है और सुख के साधन भी बहुत बढ़ रहे हैं। उसके साथ-साथ दुःख भी बढ़ रहा है। अजीब नजारा है। सुख के साधन भी बढ़ रहे हैं और अनुभव आ रहा है कि दुःख भी बढ़ रहा है। सारी दुनिया में बहुत भय छाया है। इन भय और दुःखों से मनुष्यों का छुटकारा करना हो तो विज्ञान के जमाने के लायक कोई नयी चीज, नया इलाज हाथ में आना ही चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता तो हमारा खात्मा हो जायगा। अभी तक जैसी सियासत चली आ रही है, वैसी ही इसके आगे भी चले और विज्ञान द्वारा निर्मित नयी हालत में हम नया इलाज हाथ में नहीं लेते तो इन्सान और इंसानियत भी खत्म हो जायगी। इसलिए जो नया विचार सामने आ रहा है, उसे मद्देनजर रखते हुए कोई ऐसी तरकीब ढूँढ़नी होगी, जिससे आज की सियासत हट जाय और जिसे हम 'लोकनीति' कहते हैं, उसकी स्थापना हो। लोकनीति याने 'पीपुल्स डेमाक्रेसी', जिसमें हर शख्स की आवाज पहुँचेगी। फैसले सर्व-सम्मति से होंगे और सत्ता गाँव-गाँव में विकेन्द्रित रहेगी। इसके लिए हम ग्राम-स्वराज्य की दिशा में दुनिया को ले जायँ, ताकि किसी एक मरकज में बहुत ज्यादा शक्ति न हो। मरकज में शक्ति इकट्ठी कर सबका भला हो सकेगा, यह आशा अब बिलकुल गलत है। इसके आगे तो आणविक युग आ रहा है। उसमें अणुशक्ति मिलनेवाली है। उसका उपयोग गाँव-गाँव में करना होगा। गाँव-गाँव के लोग अपना-अपना कारोबार देखेंगे। मिल-जुलकर काम करेंगे। अल्पमत और बहुमत के झगड़े नहीं होंगे। इसलिए जैसे भारत में स्वराज्य आया है, वैसे ही हर गाँव में स्वराज्य आये और इस प्रकार हम लोकशक्ति जागृत करें। तभी हम कुछ कर सकेंगे, डर और भय से छुटकारा पा सकेंगे। विज्ञान के युग में सुख के साधन बढ़ रहे हैं, दिमाग बड़ा बन गया है तो उसके साथ दिल भी बड़ा बनना चाहिए। सबके लिए हमारे दिल में स्थान हो, इस प्रकार की एक रचना हमें बनानी है। यही सर्वोदय-विचार है, जिसे लेकर हम आठ साल से घूम रहे हैं।

सर्वोदय में पार्टी का विचार नहीं आता

इस सर्वोदय-विचार में पार्टी का विचार नहीं आता। मान लीजिये, गाँव की आग बुझानी है तो पानी लेकर सब लोग आगे दौड़ेंगे। उसमें किसी पार्टी का सवाल नहीं आयेगा। इसी तरह कुछ काम ऐसे हों, जिनमें सभी लोग एक प्लैटफार्म पर आकर काम करें। ऐसे कितने ही काम हैं। अगर आज हम ऐसा नहीं करते तो पार्टी के इन झगड़ों में इंसान तबाह हो जायगा। आज के जमाने में मनुष्य के हाथ में नये-नये औजार आ रहे हैं और वह उन औजारों के हाथ में जा रहा है। इसलिए हमें नया समाज बनाना होगा, जिससे सभी सबका भला सोचें, एक-दूसरे के हितों में टक्कर न आये। शरीर के जो अवयव हैं, उनके हितों में विरोध न आये। आँख के हित के विरोध में कान का हित नहीं होता। पाँव के हित के विरोध में हाथ का हित नहीं है। बल्कि सबका हित एक ही है। हित साथ रहने में है, टुकड़े करने में नहीं, क्योंकि टुकड़े में चैतन्य नहीं रहता। मैं यहाँ बोल रहा हूँ और आप सुन रहे हैं। अगर मेरी जबान काटकर यहाँ लाउड स्पीकर के सामने रख दी जाय तो वह बोल न सकेगी। इसी तरह अगर आपके कान काटकर यहाँ रखे जायँ तो वे सुन न सकेंगे। कानों से सुना जाता है, कान नहीं सुनते। जबान से बोला जाता है, जबान नहीं बोलती। जब कान और जबान एक रुह के साथ जुड़े रहते हैं, शरीर के साथ जुड़े रहते हैं, तभी वे काम कर पाते हैं। इसी प्रकार जब हम ऐसे समाज की रचना करेंगे, जिसमें सबमें परस्पर प्रेम होगा, परस्पर के हितों में विरोध न आयेगा और वे सबकी सम्मति से फैसले करेंगे, तभी दुनिया का भला

होगा। छोटे-छोटे यूनिट्स याने अगर गाँव-गाँव के लोगों के हाथों में ऐसा स्वराज्य आ जाय, जिसमें छोटी-छोटी इकाई याने देहात में ज्यादा से ज्यादा सत्ता रहे, सबसे ऊपर की सत्ता केवल उन्हें जोड़नेवाली कड़ी हो। वह उनपर कुछ न लादे और न कोई दखल ही दे, बल्कि सलाह भर दे और हम लोक-शक्ति निर्माण कर सकें, ऐसा करेंगे, तभी दुनिया बचेगी।

क्या यों ही भेद कम हैं ?

इस पर मैंने काफी सोचा है और मुझे यकीन हो गया है। हिन्दुस्तान के लोग भी समझ गये हैं कि आज की तरह पार्टियों के झगड़े आगे भी चलते रहेंगे तो हम कोई तरक्की नहीं कर सकते। इस देश में, जहाँ अनेक धर्म, अनेक भाषाएँ, अनेक जातियाँ, अनेक सूबे और अनेक पंथ बने हैं, वहाँ अगर पार्टियों के भेद भी होंगे तो काम नहीं बनेगा, हिन्दुस्तान ऊपर नहीं उठेगा। यह बात मैं आठ साल से सुनाता हूँ और इसलिए कहता हूँ कि मालकियत मिटनी चाहिए। अगर हम छोटी-छोटी मालकियत बनाते हैं तो बड़ी मरकजी सल्तनत बनती है जो हमारे सिर पर रहती है और कहती है कि सबको पिरोने का काम हम करेंगे। इसलिए हमें ऐसी रचना बनानी होगी कि गाँव-गाँव में सारी सत्ता आ जाय, गाँव के लोग अपना कारोबार स्वयं देखें। जब सिर पर कोई सत्ता ही नहीं रहेगी तो क्या मजाल है कि ग्रामदानी गाँव में कोई सत्ता फूट डाले ? क्योंकि उस समय गाँव की व्यक्तिगत मालकियत न रहेगी, गाँव ही मालिक होगा, किन्तु आज एक-दूसरे के हित परस्पर टकरा रहे हैं। इस हालत में जैसे जंगल में जानवर रहते हैं, वैसे ही यहाँ भी लोग रहते हैं और एक सल्तनत सिर पर आ बैठती है। लेकिन अगर गाँव के लोगों के हाथ में कारोबार आयेगा और गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य आयेगा तो ऐसी कोई सल्तनत नहीं रहेगी, जो उसमें दखल देगी। हाँ, माँगने पर मदद और सलाह वह जरूर देगी। यह तभी बनेना, जब नीचेवाले लोग आपस-आपस के भेद मिटा दें और मिल-जुल कर काम करें।

सर्वोदय सबको जोड़नेवाला

मेरी यह बात आप जैसी शान्ति से सुन रहे हैं, वैसी ही शान्ति से आठ साल से लोग सुनते आये हैं। इन आठ सालों में अक्षरशः करोड़ों लोग मेरी बात सुनते चले गये। इसका कारण यही है कि लोग समझ गये हैं कि यह शख्स गैरजानिबदार है। सबकी भलाई की बात करता है, इसकी अपनी कोई संस्था नहीं, कोई पार्टी नहीं। यह एक इनफ़रादी व्यक्ति है, भगवान का बन्दा। इसे दूसरा कोई लगाव नहीं, सिवाय इसके कि सबका भला हो। इसीलिए ६ लाख लोगों ने दानपत्र दिये हैं और कहने में खुशी होती है कि यहाँ भी कुछ दानपत्र मिले हैं। लोग यही समझकर दान देते हैं कि यही विचार है, जो तारने-वाला हो। दूसरे विचार तोड़ेंगे, पर यह विचार जोड़ेगा। दूसरे तो टुकड़े करने की फन में कुशल हैं और यह शख्स, यह पद्धति चार के दो और दो के एक करनेवाली है। सर्वोदय सबको जोड़ना चाहता है।

यह 'जम्मू' है, 'टम्मू' नहीं

सबको जोड़ना जम्मू में हो जाय तो इसमें सबका 'जम' जायगा। हमने कहा है कि 'जहाँ सबका जम जाता है, वह जम्मू है'। हम ऊधमपुर जिले में गये थे तो वहाँ कहा था कि 'तुम लोग खूब ऊधम मचाओ'। तब उन लोगों ने कहा कि 'हम गरीबों की आवाज कहाँ पहुँचेगी ?' मैंने कहा 'तुम एक साथ आवाज उठाओ तो वह जम्मू को जोड़ देगा।' जम्मू जोड़ने-वाला है। यह जम्मू है, टम्मू नहीं। यह सबका जमा देगा, सबका जमानेवाला जम्मू है, तोड़नेवाला नहीं। इसका कारण यह है—इसका दस हजार साल का इतिहास है। अगर इसका इतिहास लिखना हो तो दस हजार साल का लिखना होगा। इतने प्राचीन काल से इसका इतिहास सतत चला आया है। अगर अमेरिका का इतिहास लिखना हो तो मुश्किल से पाँच सौ साल का इतिहास मिलेगा। यूरोप में कुछ देश ऐसे हैं, जिनका दो हजार साल का इतिहास है। लेकिन जम्मू का दस हजार साल का इतिहास है। इतने प्राचीन काल से यह जमात यहाँ जमी है। वैदिक आर्य यहाँ आये थे और प्राचीन काल में यहाँ रहते थे। उन्होंने ऐसी सभ्यता और ऐसी सिखावन हमें दी है कि हम सबको जमाने—"आयी पंथी सकल जमाती", सबको जीतने निकले हैं। लेकिन किसे जीतेंगे ? "मन जीते जग जीत"

सिकन्दर की कहानी

यहाँ तो सिकन्दर आया था जीतने के लिए। वह दुनिया जीतना चाहता था और दुनिया का एक बड़ा हिस्सा हिन्दुस्तान जीतने आया था। पोरस राजा ने उसका मुकाबला किया। वह हारा, लेकिन उसने ऐसा डटकर मुकाबला किया कि सिकन्दर को लौटना पड़ा। रास्ते में सिकन्दर ने एक फकीर को देखा और उससे पूछा कि 'दुनिया को जीतनेवाला बादशाह कौन है ?' फकीर ने जवाब दिया 'दुनिया का बादशाह मैं हूँ।' सिकन्दर बड़े ताज्जुब में रह गया। उसने कहा : 'तुम सिकन्दर को जानते हो ?' फकीर ने कहा : 'कौन सिकन्दर ? किस पेड़ का पल्लव' ? तब सिकन्दर समझ गया कि यहाँ ऐसे बादशाह होते हैं, जिन्हें दुनिया की बादशाहत प्राप्त करने के लिए कहीं बाहर जाना जरूरी नहीं है। यह कौनसी खूबी है ? यही, जैसा कि नानक ने कहा है "मन जीते जग जीत।" सिकन्दर समझा था "जग जीते जग जीत"। लेकिन यहाँ के लोगों ने उसे सुनाया कि "मन जीते जग जीत"। तब सिकन्दर को लगा कि हिन्दुस्तान से हमें कुछ दौलत ले जानी चाहिए। आखिर वह कौनसी दौलत ले गया ?

गजनी का मुहम्मद यहाँ आया था। बेचारा बेवकूफ था ! यहाँ से सब प्रकार के पत्थर—पीले पत्थर, हरे पत्थर, लाल पत्थर, नीले पत्थर, मोती, हीरा, नीलम, पाचू सब ले गया। मरने का मौका आया। बिस्तर पर पड़ा था बिस्तरेमर्ग। तब उसने अपने नौकरों से कहा 'मेरी दौलत मुझे देखनी है' सारे हिन्दुस्तान के पत्थरों को उसने अलग-अलग कोठरियों में रखा था। उसके नौकर उस जिन्दे को अर्थी पर लेटाकर एक-एक कोठरी के सामने ले गये और उसे दिखाया कि ये आपके जवाहर, ये आपके रत्न हैं ! देखकर वह रोने लगा कि अब यह सारा छोड़ना पड़ेगा, शायद दफनाने के काम आ सकता है। वह बहुत रोया।

लेकिन सिकन्दर ऐसा बेवकूफ नहीं था। वह यूनान देश के लिए सच्ची दौलत ले गया। यहाँ से अच्छे-अच्छे विद्वानों को ले गया। तब से भारत की विद्या यूनान देश में फैली। यूनान में पहले से भी विद्या थी। लेकिन सिकन्दर यहाँ से भी बड़े-बड़े ज्ञानियों को ले गया।

सिकन्दर की कोशिश आज भी चल रही है

मैं कहना यह चाहता हूँ कि आज भी सिकन्दर जैसी कोशिश

चल रही है। अमेरिका, रूस और चीन की भी कोशिश चल रही है। छोटों की छोटे पैमाने पर, बड़ों की बड़े पैमाने पर कोशिश चल रही है। शेर हिरन पर हमला करता है, बिल्ली चूहे पर हमला करती है। शेर बड़ा जीव है, इसलिए वह दूसरे बड़े जीवों पर हमला करता है। बिल्ली छोटी है तो छोटे जीव पर हमला करती है। किसान भी अपना खेत थोड़ा-सा एक हाथ भर आगे ले जाना चाहता है। पड़ोसी किसान के खेत में ले जाना चाहता है। वह सोचता है कि इतना इस साल पच जाय तो अगले साल और थोड़ा आगे बढ़ायेंगे। जैसे किसान पड़ोसी किसान के खेत पर नजर रखता है, वैसे ही ये देशवाले भी करते हैं। ये अपने देश के नकशे भी बनाते हैं तो उसमें दूसरे देश का थोड़ा-सा हिस्सा दिखा देते हैं, ताकि कभी उसको आगे ले लेंगे। जो नियत उस किसान की होती है, जिसका तंग नजरिया होता है, वही नियत बड़े-बड़े 'स्टेट्समैन' की होती है। वे दुनिया का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा अपने देश में लाना चाहते हैं। इस तरह सिकन्दर की कोशिश आज के जमाने में भी हो रही है।

लेकिन इस जमाने में 'न्युक्लियर वेपन्स' मनुष्य के हाथ में आये हैं, जिनके कारण पुरानी हालत नहीं रही है। इस शस्त्र का उपयोग ठीक नहीं होगा तो इन्सान का खात्मा होगा। इसीलिए पुराने तरीके छोड़कर सर्वोदय का नया रास्ता, नया तरीका लेना चाहिए। गाँव-गाँव में छोटी-छोटी इकाइयाँ बनायें और उनमें 'कोआर्डिनेशन' रहेगा। ऊपर की सत्ता गाँव को मदद पहुँचाये, दखल न दे। यह अगर करना है तो जमीन की मालकियत खत्म करनी होगी।

गाँव के सारे निर्णय गाँववाले ही करेंगे

लोग कहते हैं, क्या आप सहकारी कृषि करेंगे ? मैं कहता हूँ कि मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ। गाँव के लोग गाँव में जिस तरह प्रयोग करना चाहेंगे, उस तरह के प्रयोग करेंगे। गाँव-गाँव में अलग-अलग प्रकार के प्रयोग चलेंगे। यह सारा गाँववाले ही तय करेंगे। लेकिन हर गाँव में व्यक्तिगत मालकियत नहीं रहेगी। हवा, पानी, सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी सबकी होगी। जैसे नानक ने कहा है "पवन गुरु, पानी पिता, माता धरती मात।" गाँव-गाँव में धरती सबकी माता बनेगी और गाँव के लोग अपना इंतजाम आप करेंगे। तभी सरकार दखल नहीं देगी और मदद देगी। मैं चाहता हूँ कि यह जम्मू शहर सर्वोदय का उत्तम केन्द्र बने और यहाँ आसपास के देहातों की सेवा करने का काम हो। मैं चाहता हूँ कि जो दुःखी होगा, वह अपने से भी दुःखी दूसरा है, यह समझकर उसे कुछ न कुछ दे। आज का दिन देने का है। यह समझकर सब लोग सम्पत्ति, जमीन आदि का दान देंगे, ऐसी आशा है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

ऊधमपुर (कश्मीर) २-६-'५९

दिल जोड़ें और निडर बनें

इस प्रसन्न, गम्भीर मानससरोवर के किनारे और गगनचुंबी वृक्षों की छाया में यहाँ आप हमारी बात सुनने के लिए इकट्ठा हुए हैं तो हमें बहुत आनन्द होता है।

ये वृक्ष हरे-भरे क्यों ?

ये सारे वृक्ष कितने ऊँचे चढ़ गये हैं ? उनकी शाखाएँ आसमान में फैली हैं और जड़ें जमीन के नीचे गयी हैं। उन्हें ऊपर से आसमान में धूप मिलती है तो नीचे पाताल से पानी। इन दोनों की मदद से ये गरमी में भी हरे-भरे दीख रहे हैं। अगर ऊपर से सिर्फ धूप होती और नीचे से पानी न मिलता तो ये सारे वृक्ष सूख जाते। अगर धूप न होती और सिर्फ पानी मिलता तो वे सड़ जाते। इसी तरह हमारे जीवन में प्रेम और भक्ति का पानी चाहिए और बाहर से मेहनत, मशक्कत, सतत तपस्या होनी चाहिए। सेवा होनी चाहिए। चंदन के मुआफिक शरीर पिसता जाय, तपस्या की अग्नि में जलता रहे तो जीवन में रस आयेगा, जिन्दगी में लुत्फ आयेगा।

आज १२ मील ऊपर चढ़ना और नीचे उतरना हुआ। बड़ा आनन्द आया। डेपुटी कमिश्नर कहते थे कि 'आपको हमारे जिले में बड़ी तकलीफ है।' लेकिन हमें तो इसमें बड़ा आनन्द आता है, क्योंकि ऊपर से यह ताप और अंदर से भक्ति का झरना (पानी) बह रहा है। नहीं तो इतनी तकलीफ उठाते हुए हम सूख जाते—शरीर थक जाता। अंदर से भक्ति के प्रेम का पानी है, इसलिए थकान नहीं आती। इसी तरह इन वृक्षों के भी नीचे से पानी और ऊपर से धूप का लाभ मिलता है, जिससे वे हरे-भरे रहते हैं।

आपसे परिचय पाने आया हूँ

मेरे प्यारे भाइयो ! बड़ी खुशी की बात है कि मुझे आप सबसे मिलने का मौका मिला है। मैं कश्मीर में आया तो खास अपनी ओर से कुछ करने नहीं आया हूँ। सब विचार मैंने जेब में रख दिये हैं। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में भूदान, ग्रामदान आदि बातें चली थीं। मन में था कि जरा कश्मीर जाऊँ और देखूँ-समझूँ। यहाँ मैं लोगों के साथ बात करने में समय भी बहुत देता हूँ। हिन्दुस्तान में इतना समय बात करने में नहीं देता था। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के भाइयों के दिलों के साथ मेरा परिचय हो। फिर अगर वे चाहें तो अन्दर दाखिल होना चाहता हूँ।

दो काम करें

पहली बात मैं यह चाहता हूँ कि यहाँ सब दिल जुड़ जायँ। दूसरी बात, जनता निडर, निर्भय बने और अंदर शान्ति, हिम्मत, इतमीनान महसूस करे। दिल का इत्तिफाक हो—सब दिल एक हो जायँ और डर न रहे, ये दो चीजें जम्मू और कश्मीर में मैं कर सकूँ तो यहाँ की सारी तकलीफों की भरपाई मान लूँगा।

'पंडिताः समदर्शिनः'

आज कुछ कबीरपंथी हरिजन मिलने आये थे। उन्होंने मांस खाना छोड़ दिया है। वे कहते थे कि "आज भी हमें दूर रखा जाता है।" यह गलत बात है। हम बैल पर भी प्यार

करते हैं, प्यार से उसे स्पर्श करते हैं। गाय पर, कुत्ते पर भी प्यार करते हैं। मैंने ऐसे ब्राह्मण देखे हैं, जो खाना खाते समय बिल्ली को अपने पास बिठाकर दहीभात खिलाते हैं। प्राणीमात्र पर प्यार करना मनुष्य का धर्म ही है। ऐसी हालत में हम इन्सान को भी दूर रखें और उसमें भी कबीर के भक्तों को दूर रखें, यह बड़ी नासमझी है। मैं चाहता हूँ कि हम ऐसा करना छोड़ दें। यह तो धर्म नहीं है। हम सबके साथ प्रेम से रहें। किसीको नीचा न मानें। सबको बराबरी का मानें। "नानक उत्तम-नीच न कोई।" हम सब परमेश्वर की संतान हैं। परमेश्वर का रक्षण सबको समान हासिल है। इसलिए यह ऊँच-नीच भाव हम छोड़ दें। मैंने भी धर्म-शास्त्र का अध्ययन किया है। मैं जानता हूँ कि यह धर्म नहीं, बल्कि धर्म के खिलाफ है। गीता में कहा है, पंडित लोग कुत्ता, चांडाल, हाथी, गाय, ज्ञानी सबको समान भाव से देखते हैं।

मैत्रीभाव से देखें और रहें

हम सब भाई-भाई हैं। किसीको हम नीच न समझें, हीन न समझें। हम सब समान हैं। हमें किसीको न डराना चाहिए और न किसीसे डरना ही चाहिए। आज हम इधर किसी को डराते हैं और उधर कोई अधिकारी आ जाय तो उससे डरते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि ये सब हमारे नौकर हैं। सरकार हमारी नौकर है। वह लोगों द्वारा चुनी हुई है। लोगों की सेवा के लिए, लोगों की तरफ से, लोगों की संमति से वह काम करती है। इसलिए ये अधिकारी आते हैं तो उनसे डरना नहीं चाहिए। जो शख्स किसीको दबाता है, वह दूसरे किसी से दबता भी है। बिल्ली चूहे को दबाती है तो कुत्ते के सामने दबती भी है। हमें किसीको ऊँचा नहीं मानना चाहिए। हम सबके सिर पर भगवान हैं। सबके साथ मैत्रीभाव से देखना और रहना चाहिए। मैत्रीभाव रहेगा तो दिल से दिल जुड़ेगा।

ऊधमपुर में १५० शान्ति-सैनिक

इन दिनों हम लोगों से शांति के काम के लिए नाम माँगते हैं और लोग दे रहे हैं। हम कहते हैं कि आज तक घर का काम तो हम करते ही आये हैं। अब समाज की सेवा का काम करें। 'जहाँ अशांति होगी, वहाँ शांति के लिए हम मर मिटेंगे', ऐसा कहनेवाले लोग हमें चाहिए। हमें कहने में खुशी होती है कि इन १०, १२ दिनों में यहाँ कठुवा और ऊधमपुर जिले में १५० से अधिक नाम मिले हैं।

दिल खुलने चाहिए

आज ही सुबह हमने एक तमाशा देखा। लोग मिलने आये थे। वे अपना दुःख बताते थे। सब लोगों ने जमीन की माँग की। कहा जाता है कि यहाँ सबको जमीन बाँटी गयी है। खैर! जब तक दिल नहीं खुलता, तब तक सरकार के कानून से कुछ होनेवाला नहीं है। २० एकड़ का सीलिंग किया। एक घर में पाँच भाई हैं। हरएक ने अपने नाम पर २० एकड़ जमीन रख ली तो कानून क्या करेगा? लोभी मन सरकार के कानून को नहीं मानता। कानून से जब बात होती है तो लोग कानून से बचने की कोशिश करते हैं। मैं जो बात करता हूँ, वह प्रेम की बात है, कानून की नहीं। अपने भाइयों के लिए, पड़ोसी के लिए दिल खुलना चाहिए और दान देना चाहिए।

यहाँ ग्रामदान हो सकता है

आज हमने यहाँ आते-आते रास्ते में 'भुवनेश्वर' देखे। भुवनेश्वर याने बाँबी (Ant-hill)। यहाँ डोंगरी भाषा में उसे 'बरमी' कहते हैं। उड़ीसा में हमने उसे 'भुवनेश्वर' नाम दिया। वहाँ भुवनेश्वर का बहुत बड़ा मन्दिर है और ऐसी बाँबियाँ वहाँ बहुत बड़ी-बड़ी १५ फुट ऊँची भी देखीं। उनमें बड़े-बड़े कमरे भी देखे। कोरापुट में भी इन भुवनेश्वरों को देखा। उस जिले में ग्रामदान सबसे ज्यादा हुए हैं। तब से मैंने कहा कि यह क्षेत्र ग्रामदान का है। जहाँ-जहाँ ऐसे 'भुवनेश्वर' हमने देखे, वहाँ ग्रामदान का क्षेत्र बना है। यहाँ भी भुवनेश्वर हैं। छोटे हैं, लेकिन यहाँ भी 'ग्रामदान' हो सकता है। यहाँ २२ एकड़ का सीलिंग तो बना है। लेकिन हम चाहते हैं कि जमीन की मालकियत न रहे। हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी सबकी हो जाय। इस ग्रामदान की बुनियाद पर 'ग्रामस्वराज्य' की इमारत खड़ी हो जाय। इस पर आप सोचिये।

अनुक्रम

१. जम्मू सर्वोदय का उत्तम केन्द्र बने
जम्मू ९ जून '५९ पृष्ठ ५१७
२. दिल जोड़ें और निडर बनें
ऊधमपुर २ जून '५९ ,, ५१९

◆◆◆

राष्ट्रभाषा

हिन्दुस्तान में हमें सब तरह की एकता स्थापित करनी है। इसके लिए हमारी माँग है कि हिन्दुस्तान में एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। एक राष्ट्रभाषा इसलिए नहीं होनी चाहिए कि हिन्दुस्तान में जो दस-बीस भाषाएँ हैं, वे निकम्मी हैं। लेकिन इसलिए कि हमें सारे हिन्दुस्तान का प्रेम बढ़ाना है, एक-दूसरे का प्रेम जोड़ना है। भारत को एक बनाने के लिए तमिलनाड का सन्देश पंजाब में और पंजाब का तमिलनाड में पहुँचाना है। वह किस भाषा से हो सकेगा? राष्ट्रभाषा से! अतः एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है!

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी